SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं का सामाजिक कारकों के संदर्भ में अध्ययन"

अनिता सिंह
शोधकर्त्री
शिक्षक–शिक्षा विभाग,
बरेली कॉलेज, बरेली

डा0 भारती डोगरा
शोध निर्देशिका
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग,
बरेली कॉलेज, बरेली

सारांश –

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं का अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके संज्ञानात्मक विकास, समस्याओं के समाधान और निर्णय लेने की क्षमता का आधार बनता है। तार्किक क्षमताओं को विकसित करने में कई सामाजिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन कारकों का अध्ययन करने से यह समझने में मदद मिलती है कि किस प्रकार सामाजिक परिवेश, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा का स्तर और समाज के अन्य तत्व विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर प्रभाव डालते हैं। माता–पिता की शिक्षा का स्तर विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर सीधे प्रभाव डालता है। शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों को बेहतर शिक्षण सामग्री और वातावरण प्रदान कर सकते हैं। आर्थिक रूप से संपन्न परिवार अपने बच्चों को बेहतर स्कूल, शिक्षण साधन और अतिरिक्त कोचिंग की सुविधा प्रदान कर सकते हैं, जिससे उनकी तार्किक क्षमताओं का विकास बेहतर हो सकता है। परिवार में तार्किक बातचीत और समस्या–समाधान के लिए प्रोत्साहित करने से बच्चों की तार्किक क्षमताओं में वृद्धि होती है। स्कूल में शिक्षकों की योग्यता और शिक्षण विधियों का विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सक्रिय शिक्षण विधियों से तार्किक सोच को प्रोत्साहन मिलता है। विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक संसाधन जैसे पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशालाएं, कंप्यूटर लैब इत्यादि भी विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं के विकास में सहायक होते हैं। समुदाय का वातावरण और सामाजिक मूल्य विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं को प्रभावित करते हैं। समाज में यदि तार्किकता और शिक्षा को महत्व दिया जाता है, तो विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलती है। सहपाठियों के साथ तार्किक चर्चाएं और समूह गतिविधियों में भाग लेने से तार्किक क्षमताओं का विकास होता है। विभिन्न संस्कृतियों में तार्किक सोच और समस्या समाधान के प्रति अलग–अलग दृष्टिकोण होते हैं। कुछ संस्कृतियाँ वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती हैं जबकि कुछ पारंपरिक दृष्टिकोण को महत्व

देती हैं। परंपरागत और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के मिश्रण से विद्यार्थियों में तार्किक क्षमताओं का संतुलित विकास संभव है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं का विकास कई सामाजिक कारकों पर निर्भर करता है। इन कारकों का अध्ययन करके शिक्षाविद् और नीतिनिर्माता विद्यार्थियों के लिए अधिक समग्र और प्रभावी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं, जो उनके तार्किक क्षमताओं को बढ़ावा देने में सहायक हो। शोध के निष्कर्ष – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक, क्षमताओं पर उनके परिवार के प्रकार (संयुक्त/एकल) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर उनके विद्यालय के प्रकार (सरकारी/निजी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

शिक्षा एक व्यापक तरीके से ज्ञान, अनुभव, और जागरूकता का प्राप्तिकरण है जो व्यक्ति की बुद्धि, चिन्तन, और व्यवहार को प्रभावित करता है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न ज्ञान, कौशल, और मूल्यों का अध्ययन, समझ, और अनुप्रयोग होता है। शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है व्यक्तित्व विकास, जो एक व्यक्ति के मानवीय, सामाजिक, और आध्यात्मिक पहलुओं को समझाने और बढ़ावा देता है। यह विद्यालयी और अनुभवी शिक्षकों द्वारा संचालित शिक्षा प्रणालियों के माध्यम से हो सकता है। शिक्षा का अर्थ बहुत व्यापक है, जो केवल विद्यालय शिक्षा से ही सीमित नहीं है। शिक्षा विभिन्न स्रोतों से होती है, जैसे कि परिवार, समाज, और अनुभव। इसके अंतर्गत ज्ञान का प्राप्तिकरण, समझ, और उसका उपयोग शामिल होता है। इसके लिए शिक्षा एक निरंतर प्रक्रिया होती है जो जीवन के हर क्षेत्र में लागू होती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति न केवल ज्ञान की अर्जन करता है, बल्कि वह नई सोच, सोच की क्षमता, समस्याओं का समाधान करने की क्षमता, सामाजिक सहयोग, और सामाजिक न्याय की समझ भी विकसित करता है। इस तरीके से, शिक्षा एक व्यक्ति के व्यक्तित्व और समाज के साथ उसके संबंध को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता का महत्वपूर्ण हिस्सा है उनकी सोचने और समस्याओं को समाधान करने की क्षमता। यह योग्यता उनके विचारों को तर्कसंगत और लोजिकल तरीके से समझने और प्रस्तुत करने की क्षमता को संकेत करती है। तार्किक योग्यता से विद्यार्थी विभिन्न पक्षों से जानकारी जुटा सकते हैं, अपने विचारों को विवेचित कर सकते हैं, और विभिन्न समस्याओं का विश्लेषण कर सकते हैं। एक तार्किक विद्यार्थी अपने धारणाओं को प्रयोग करके समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होता है। वह विविध प्रकार के प्रश्नों का सामना करने में समर्थ होता है और अपने विचारों को स्पष्टता से व्यक्त करता है। तार्किक योग्यता विद्यार्थियों को समस्याओं के लिए विवेकपूर्ण समाधान ढूंढने में मदद करती है, जिससे वे समस्याओं को समझने और हल करने के लिए सक्षम होते हैं। तार्किक योग्यता विद्यार्थियों को विभिन्न तरीकों से विचार करने और विभिन्न स्थितियों में विवेकपूर्ण निर्णय लेने में मदद करती है। यह उन्हें नए और अनूठे समस्याओं का सामना करने की क्षमता प्रदान करती है, जिससे उनकी सोच और समझ में वृद्धि होती है। तार्किक योग्यता विद्यार्थियों की अग्रणी योग्यताओं में से एक है, जो उन्हें सोचने और समस्याओं को हल करने में मार्गदर्शन करती है। विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता का विकास और संरक्षण उनके जीवन में महत्वपूर्ण है, और इसमें विभिन्न जैविक कारकों का महत्व होता है। जैविक कारकों का मतलब है कि कैसे विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य उनकी तार्किक योग्यता पर प्रभाव

डालते हैं। शारीरिक कुशलता तार्किक योग्यता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छे स्वास्थ्य वाले विद्यार्थी सक्रिय और उत्साही रहते हैं, जो उन्हें नई समस्याओं का सामना करने की क्षमता देता है। उनके शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना उन्हें अधिक तार्किक और समाधानात्मक सोचने में सहायक होता है। एक स्वस्थ मानसिक स्थिति विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को समझने और उन्हें नियंत्रित करने में मदद करती है। संतुलित और स्थिर मानसिक स्वास्थ्य वाले विद्यार्थी अपनी चुनौतियों का सामना करने के लिए अधिक सक्षम होते हैं और तार्किक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हैं। आत्मिक स्वास्थ्य उत्तम तार्किक योग्यता के लिए आवश्यक है। यह उन्हें अपने मूल्यों, मूल्यांकनों और उद्देश्यों को समझने में मदद करता है। स्वाधीनता, स्वाध्याय और ध्यान विद्यार्थियों को अपने आप को विकसित करने में मदद करते हैं, जिससे उनकी तार्किक सोचने की क्षमता मजबूत होती है। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के संबंध में जैविक कारक विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता को प्रभावित करते हैं। उन्हें इन सभी क्षेत्रों में सुधार करने के लिए संतुलित जीवनशैली अपनानी चाहिए, जिससे वे अपनी तार्किक सोचने की क्षमता को विकसित कर सकें। विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता का सामाजिक कारकों के संदर्भ में लेख लिखना एक महत्वपूर्ण विषय है। आजकल की दुनिया में, तार्किक क्षमता का महत्व और जरुरत बढ़ गई है, खासकर सामाजिक संदर्भ में। तार्किक क्षमता सिर्फ नैतिकता, विज्ञान, और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि समाज में समस्याओं को समझने, समाधान करने, और सामाजिक परिवर्तन में भागीदारी करने के लिए भी आवश्यक है। समाज में तार्किक क्षमता के आवश्यकता का मुख्य कारण यह है कि एक समाज में विभिन्न दृष्टिकोण और मतभेद होते हैं। एक स्थिति को समझने के लिए, लोगों को विभिन्न तत्वों को ध्यान में रखना, उन्हें विश्लेषण करना, और उसके परिणामों को निर्धारित करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। तार्किक क्षमता उन्हें अधिक समझदार और संवेदनशील बनाती है, जिससे वे समाज में सहभागिता और समर्थन के साथ अपने दृष्टिकोण को साझा कर सकें। समाज में तार्किक क्षमता के अभाव से सामाजिक समस्याओं को समझने और समाधान करने में अधिक संकट होता है। विविधता, असमानता, और अधिकारों की अवगति समाज में विभिन्न विवादों का कारण बन सकती हैं। तार्किक क्षमता के साथ, विद्यार्थी सकारात्मक और सही समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं, जो सामाजिक समस्याओं का समाधान करने में मददगार होता है। तार्किक क्षमता समाज में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को बढ़ावा देती है। विद्यार्थी, अपनी तार्किक क्षमता का उपयोग करके समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए संघर्ष कर सकते हैं, जैसे कि उच्च शिक्षा, समाज सेवा परियोजनाएं, और न्यायालय में योजनाएं के माध्यम से। समाज में तार्किक क्षमता का महत्व और उपयोग अविश्वसनीय है। यह विद्यार्थियों को सामाजिक समस्याओं को समझने, समाधान करने, और समाज में सकारात्मक परिवर्तन करने के लिए तैयार करता है। शिक्षा प्रणाली को तार्किक क्षमता को विकसित करने के लिए विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता उनके मनोवैज्ञानिक कारकों पर निर्भर करती है, जो उनके विचारों, अनुभवों, और शैक्षिक परिसर के संदर्भ में उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता पर उनके शैक्षिक परिसर का बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। एक सुसज्जित, विचारशील और विश्लेषणात्मक शैक्षिक परिसर विद्यार्थियों को तार्किक योग्यता को विकसित करने में मदद करता है। विद्यार्थियों की मानसिकता और तार्किक विकास पर उनके परिवार का भी गहरा प्रभाव होता है। परिवार के सदस्यों के विचार, उनकी सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव और उनकी शिक्षा के प्रकार से विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता पर असर पड़ता है। शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंध भी तार्किक क्षमता पर प्रभाव डालते हैं। एक सकारात्मक,

सहयोगी और प्रेरक संबंध छात्रों को विचारों को साझा करने और विभिन्न परिस्थितियों को विचारात्मक रूप से विश्लेषित करने के लिए प्रेरित करता है। व्यक्तिगत गुण भी तार्किक क्षमता पर असर डालते हैं। उत्साह, संवेदनशीलता, और संघर्ष क्षमता विद्यार्थियों को नई विचारों की खोज करने और समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षा के लिए उपलब्ध पर्यावरण भी तार्किक क्षमता का महत्वपूर्ण स्रोत है। विद्यार्थियों के लिए विभिन्न संदर्भ, विशेष रूप से लाभकारी प्रश्नों और समस्याओं को समझने और हल करने के लिए व्यापक पर्यावरण महत्वपूर्ण है। इन सभी कारकों का संयोजन विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता का परिणामकारी बनाता है, जिससे वे समस्याओं का विश्लेषण करने, संदेहों को समाधान करने, और नए विचारों को प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं।

इस प्रकार, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं का सामाजिक कारकों के संदर्भ में अध्ययन एक व्यापक और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक होती है।

आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक शिक्षा जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण है जहाँ विद्यार्थी अपने शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास की नींव रखते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यही वे क्षमताएँ हैं जो उन्हें समस्याओं को सुलझाने, निर्णय लेने और समाज में अपने विचारों को प्रस्तुत करने में सहायता करती हैं। तार्किक क्षमताओं के विकास के साथ–साथ सामाजिक कारकों के अध्ययन का महत्व भी अपरिहार्य है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को अपने समाज और उसके विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाता है।

तार्किक क्षमताएँ, जैसे विश्लेषणात्मक सोच, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता और तर्कसंगत निष्कर्ष निकालना, विद्यार्थियों के लिए आवश्यक हैं। माध्यमिक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थी जटिल विषयों और अवधारणाओं का सामना करते हैं, जिनके समाधान के लिए तार्किक सोच की आवश्यकता होती है। तार्किक क्षमताओं का विकास विद्यार्थियों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोचने, सटीक और सटीक उत्तर पाने के लिए सूचनाओं का विश्लेषण करने और नए विचारों को उत्पन्न करने में सक्षम बनाता है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

सामाजिक कारक, जैसे परिवार, मित्र, स्कूल का वातावरण, संस्कृति, और आर्थिक स्थिति, विद्यार्थियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक कारकों का अध्ययन विद्यार्थियों को अपने समाज और उसके विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूक बनाता है। यह अध्ययन उन्हें सामाजिक समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देता है। सामाजिक कारकों के अध्ययन से विद्यार्थी विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने में सक्षम होते हैं और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझते हैं।

तार्किक क्षमताओं और सामाजिक कारकों के अध्ययन का समन्वय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। जब विद्यार्थी तार्किक क्षमताओं का उपयोग करते हुए सामाजिक कारकों का विश्लेषण करते हैं, तो वे समाज की समस्याओं को गहराई से समझ सकते हैं और उनके समाधान के लिए प्रभावी रणनीतियाँ विकसित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी किसी सामाजिक समस्या, जैसे बाल मजदूरी या पर्यावरण प्रदूषण,

पर अध्ययन करते हैं, तो वे तर्कसंगत ढंग से इसके कारणों और प्रभावों का विश्लेषण कर सकते हैं और इसके समाधान के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोच सकते हैं।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं का सामाजिक कारकों के अध्ययन की आवश्यकता और महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन विद्यार्थियों को तार्किक दृष्टिकोण से सोचने, सामाजिक समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने में सक्षम बनाता है। शिक्षकों, माता–पिता और समाज को मिलकर विद्यार्थियों के इस विकास में सहयोग देना चाहिए, ताकि वे एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बन सकें और समाज के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

निम्नलिखित विद्यार्थियों ने प्रस्तुत विषयों को शोध का विषय बनाया है जिसमें **हुसेन पोलाट, फातमा बिल्गे एम्रे (2021)**, **राहुल कनौजिया एवं विजय जायसवाल (2021)**, **डॉ. ई. रामगणेश एवं टी. संजीवी रेड्डी (2021)**, **प्रियंका देब सेट (2021)** आदि प्रमुख है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं का सामाजिक कारकों के संदर्भ में अध्ययन

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर परिवार के प्रकार (संयुक्त/एकल) के प्रभाव का अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर विद्यालय के प्रकार (सरकारी/निजी) के प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर उनके परिवार के प्रकार (संयुक्त/एकल) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर उनके विद्यालय के प्रकार (सरकारी/निजी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 09 एवं कक्षा 10 के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

न्यादर्श के द्वारा यादृच्छिक न्यादर्श से लगभग 50 विद्यालयों का चयन किया जायेगा जिसमें कक्षा 9 के 400 तथा कक्षा 10 के 400 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया हैं।

उपकरण

तार्किक क्षमता मापनी :– एल.एन. दुबे द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पनायें क्रमांक 1 :– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर उनके परिवार के प्रकार (संयुक्त/एकल) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यालयों के संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
संयुक्त परिवार	480	66.89	3.61	0.31	***
एकल परिवार	320	66.82	3.55		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यालयों के संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता को दर्शाया गया है। तालिका में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यालयों के संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन 66.89 एवं 3.61 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यालयों के एकल परिवार के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 66.82 एवं 3.55 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.31 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0. 01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यालयों के संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना क्रमांक 2 :– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर उनके विद्यालय के प्रकार (सरकारी/निजी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी–निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी विद्यालय	400	66.79	3.62	1.45	***
निजी विद्यालय	400	67.04	3.55		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी–निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता को दर्शाया गया है। तालिका में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन 66.79 एवं 3.62 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 67.04 एवं 3.55 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.45 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी–निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर उनके परिवार के प्रकार (संयुक्त/एकल) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं पर उनके विद्यालय के प्रकार (सरकारी/निजी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- प्रियंका देब सेट (2021). दक्षिण दिल्ली में माध्यमिक स्तर के स्कूली छात्रों की तार्किक सोच क्षमता का महत्व, शोध पत्र, IOSR Journal of Dental and Medical Sciences (IOSR-JDMS) e-ISSN: 2279-0853, p-ISSN: 2279-0861.Volume 20, Issue 8
- डॉ. ई. रामगणेश एवं टी. संजीवी रेड्डी (2021). गणित में उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के भविष्यवक्ता के रूप में स्कूली छात्रों का तार्किक तर्क, शोध पत्र, International Journal of Management (IJM) Volume 12, Issue
- राहुल कनौजिया एवं विजय जायसवाल (2021) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की समस्या समाधान क्षमता व तार्किक योग्यता का अध्ययन, शोध पत्र, P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-9, ISSUE-4 May -2021 E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/31

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अनिता सिंह और डा0 भारती डोगरा

For publication of research paper title

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की तार्किक क्षमताओं का सामाजिक कारकों के संदर्भ में अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com